वर्ष - 7
अंक -5
मई, 2015
मूल्य 10/-

# बाल किलकारी

विशेषांक
बदलता मौसम

## किलकारी लाल

प्यारे दोस्तो, हमारे स्कूलों में अब गर्मी की छुट्टी हो गई है। हम कुछ दिनों के लिए बैग-बस्ता को भूल कर कुछ नया करने के लिए सोचने लगे हैं। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि अचानक मौसम क्यों बदल जाता है! असमय क्यों बरसात होने लगती है! क्यों ज्यादा गर्मी पड़ने लगती है। क्या पेड़ों की कटाई के कारण ऐसा हो रहा है, या फिर जहाँ-तहाँ के कूड़े-कचरों से निकलने वाली जहरीली गैसों के कारण? क्या बढ़ती जनसंख्या और बड़े-बड़े टावरों के कारण ऐसा हो रहा है या फिर पेट्रोल-डीजल वाली गाड़ियों के कारण? हम इन चीजों पर जरूर विचार करेंगे और इसकी जड़ तक पहुँचने की कोशिश करेंगे। तब तक चलते हैं एक कहानी की ओर।

"ओए श्याम, बैठे-बैठे क्या सोच रहे हो।" उसके मित्र ने पूछा। इस पर श्याम बोला,"कुछ नहीं यार बस ऐसे ही।" "अरे भाई, अभी तक न पढ़ने की चिन्ता है, न ही अब कन्धे पर बस्ते का बोझ है, फिर क्यों तुम्हारा चेहरा इतना उतरा हुआ है?" उसके मित्र ने फिर सवाल किया। इतना सुन श्याम बोला," वह क्या है न यार, इस छुट्टी में कुछ नया और बेहतर काम करने की सोच रहा हूँ।" "अच्छा तो यह बात है। चलो, कल से पैसे इकट्ठे करके कुछ पौधे और डस्टबीन खरीदते हैं। जहाँ-जहाँ कूड़े के स्थान है, वहाँ-वहाँ डस्टबिन रखेंगे और खाली जगहों पर पौधे भी लगाएँगे।" उसके मित्र ने कहा। इस पर श्याम ने पूछा, "इससे क्या होनेवाला है यार?" "बहुत कुछ होगा भई। अब तुम्हीं देखो न! बिना मौसम की बरसात हो जाना। अनेकों बीमारियों का होना, ज्यादा गर्मी पड़ना या फिर कई सारी मुसीबतों का आना और इन्हीं चीजों से लड़ने के लिए यही एक बेहतर रास्ता है।" उसके मित्र ने कहा। यह सुन श्याम बोल उठा," क्या बात कही तुमने यार! मेरे दिमाग में तो चार पंख लग गए। कल से क्या अभी से ही इस काम को शुरू करते हैं।" "हाँ-हाँ क्यों नहीं, चलो करते हैं।" उसके मित्र ने जवाब दिया। तो दोस्तो, इस गर्मी में आप भी कुछ ऐसा ही करना चाहेंगे न!

- मुनटुन राज

प्रेरक प्रसंग

## लालच बुरी बला है



एक आदमी था। बहुत अमीर था। लेकिन वह लालची भी था। वह लोगों को ठगा करता था। लोगों की संपत्ति को वह उनसे धोखे से हड़प लेता था। इस प्रकार लालची की दौलत बढ़ती गई। वह दिन पर दिन अमीर होता चला गया। लालची आदमी का सेक्रेटरी बहुत दयालु था। उसे अपने मालिक की यह चाल पसंद नहीं थी। उस सेक्रेटरी ने अपने मालिक को धोखा दिया और धोखे से अपने मालिक की सारी संपत्ति फिर से उन गरीबों के नाम करवा दी। इस प्रकार लालची आदमी की सारी संपत्ति उसके हाथ से चली गई। वह गरीब बन गया। उसके पास अब कुछ नहीं था। वह दर-दर की ठोकरें खाने लगा। उसकी हालत भिखारी जैसी हो गई थी। पाँच वर्ष बीत गये। एक दिन ईश्वर ने उसकी परीक्षा लेने की सोची। वह एक दिन अँधेरी गली से गुजर रहा था। तब उसे कुछ आवाज सुनाई दी। वह पीछे मुड़ा। उसने देखा कि अँधेरे में कुछ जगमगा रहा था। उसे अहसास हुआ कि ईश्वर उनके सामने हैं। पहले तो उसने ईश्वर को प्रणाम किया, फिर अपनी गलती के लिए उनसे माफी माँगी। दया की भीख माँगने लगा। इसपर ईश्वर प्रसन्न हुए और कहा, " ठीक है, मैं सोने के सिक्कों की बरसात करता हूँ और तुम उसे अपने बोरे में रखना। लेकिन एक शर्त है, जो सिक्के जमीन पर गिरेंगे वे गायब हो जाएँगे और जब तुम मुझे रुकने के लिए कहोगे तो मैं सिक्कों की बरसात रोक दूँगा।" इस प्रकार सिक्कों की बारिश शुरू हो गई। बोरा भरता गया लेकिन उस भिखारी ने ईश्वर को सिक्कों की बारिश रोकने के लिए नहीं कहा। अंत में बोरा भरकर नीचे से फट गया और सारे सिक्के जमीन पर गिर कर गायब हो गए। उस भिखारी का लालच खत्म नहीं हुआ था, इसीलिए वह फिर एक बार लालच के कारण गरीब रह गया।

## माथापच्ची

आप क्रमानुसार एक के बाद दूसरी दो ऐसी संख्या बताएँ जिनका योग 27 और गुणनफल 182 हो।

कविता

## जय वसंत

जय जय वसंत देवता।
जब आते तब होत एकता।।
खिलती हैं खुशियों की कलियाँ।
सजने लगती सारी गलियाँ।।
जय ग्रीष्म जय लू के दाता।
आप के आते आम है आता।।
प्यास है लगती भूख है मिटता।
बी.पी. का भी स्तर है घटता।।
जय वर्षा दादुर की देवी।
बाढ़े फसल आप से वेगी।।
मोर है नाचे पवन है गावै।
देख हरित ये मन हर्षावै।।
हे हेमंत मन के अनंत।
अब दीजिए मन को आनंद।।
हैं दिखते मीठे गुल्कन्द।
जब आते तब लगते संत।
हे जाड़ा है तारनहारा।
करें दास पर कृपा दोबारा।।
आप के डर से लोग काँपते।
हैं कोहरे को साथ में लाते।।
शरद देव जी आप के आते।
शीतलता से मन मुस्काते।
जी करता खाने को घेबर
जब पछुआ बयार है बहती।।
आप के सुमिरन कर देवों के।
मिटते क्रोध और आक्रोश।।
ऋतु वसंत जो जन गावै।
दु:ख दरिद्रता पास न आवै।।
वह मानव होता है चंगा।
और नहाता रोज वो गंगा।।

**दोहा-**

जय ग्रीष्म जय शरद् ऋतु
जय हेमंत वसंत।।
जो ध्यावै इस ऋतु को।
सुख भोगै अनंत।।

-शुभ दर्शन



समर कैंप
23 मई से 14 जून, 2015

चक धूम-धूम 2015

किलकारी
बिहार बाल भवन

**किलकारी में ग्रीष्मोत्सव का उद्‌घाटन**
**23 मई, 2015**

## बिहार के होनहार

राष्ट्रीय बाल श्री सम्मान -2014, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में पूरे भारतवर्ष से बच्चे अपनी-अपनी पसंद की विधाओं में शामिल हुए। किलकारी बिहार बाल भवन, पटना के अभिनव आजाद (वैज्ञानिक नवीकरण), कृष्णा कुमार (प्रदर्शन कला) एवं विष्णु प्रिया (सृजनात्मक लेखन) में राष्ट्रीय अवार्ड के लिए चयनित हुए हैं।

**-किलकारी परिवार की ओर से बहुत-बहुत बधाई!**

अभिनव आजाद

कृष्णा कुमार

विष्णु प्रिया

## भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले। पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

-बाल सम्पादक मंडल

## गर्मी की छुट्टी

पढ़-पढ़ कर जब थक गया
मौसम से और ठंडक गया
तब छुट्टी को मैंने पुकारा
अब मुझे सिर्फ तेरा सहारा
छुट्टी आई, खुशियाँ लाई,
बस्ते को है दूर भगाई।
अब तो उठना आठ बजे,
उठते ही मन में ढोल बजे।
कभी खेलना, कभी कूदना,
अब न कोई रुटीन अपना।
कभी खाना तो कभी टी.वी.
अब इनसे है मेरी करीबी।
कभी मामा घर, कभी भैया घर
और कभी इधर-उधर
खूब मस्ती हुई, खूब धमाल
छुट्टी का पल सबसे कमाल।

-**अमित कुमार**
वर्ग-10

## कल से बेहतर आज हुआ

गर्मी की छुट्टी हुई,
राहत आई पूरी।
अब नहीं है सहना,
धूप में रहने की मजबूरी।
खेलेंगे-कूदेंगे,
करेंगे समर-कैम्प का क्लास।
आम जूस पीकर
मिटायेंगे अपनी प्यास।
समर कैम्प में सीखेंगे,
नई-नई कलाएँ।
गर्मी भागी मौसम बदले,
ऐसी चली हवाएँ
बूँदों की फुहार से,
बरसात का आगाज हुआ।
पेड़-पौधे झूम उठे।
कल से बेहतर आज हुआ।

-**वैष्णवी कुमारी**

## कहानी

# मेहनत रंग लायी

आज सभी बच्चे खुश होकर स्कूल गये। कल से गर्मी की छुट्टी होने वाली थी। लगभग सभी बच्चे क्लास में आ गये थे। क्लास भी शुरू हो चुकी थी। लेकिन अभी तक देव का कुछ पता नहीं था। सभी बच्चे उसका मजाक उड़ा रहे थे। एक बोला,''नहीं, वह तो अभी सो ही रहा होगा।'' इतना बोलकर सभी बच्चे हँसने लगे। इतने में ही देव वहाँ पहुँच गया। सभी बच्चों ने उसे देखा और हँसने लगे और बोले,'' देखो नाम लेते ही शैतान हाजिर हो गया।'' मास्टर जी थोड़े गुस्से में आकर बोले, ''चुप रहो, चुप रहो सभी शांत हो जाओ। बताओ देव अब तक तुम कहाँ थे?एक तो पढ़ने में कमजोर हो और ऊपर से देर से क्लास में आते हो।'' मास्टर जी देव से बोले। देव चुपचाप सिर झुकाया रहा और कुछ नहीं बोला। मास्टर जी फिर बोले, ''मैं तुम्हीं से कुछ पूछ रहा हूँ। बताओ कहाँ थे।'' ''सर आज मैं सोकर देर से उठा था, जिसके कारण मुझे आने में देर हो गई। माफ कर दीजिए। अगली बार से ध्यान रखूँगा।'' '' ठीक है, चलो बैठ जाओ।'' मास्टर जी बोले,'' हाँ, तो बच्चो कल से आप सभी की गर्मी की छुट्टियाँ हैं।'' ''जी सर।'' बच्चों ने कहा। बातचीत के बाद थोड़ी पढ़ाई हुई।

फिर छुट्टी की घंटी बजी। सभी बच्चे लाइन बनाकर निकल रहे थे, उसी लाइन में देव भी था। एक लड़का पीछे से बोला,'' ऐ भोंदू, जल्दी चलो न क्या चलने भी नहीं आता है।'' यह सुनकर सभी बच्चे हँस पड़े। देव को बुरा लगा लेकिन वह कुछ नहीं बोला। वह सीधा घर की ओर चल पड़ा। वह मन-ही-मन सोच रहा था कि मैं रोज अगर पढ़ता तब तो मुझे भोंदू कोई नहीं बोलता। वह सोचते-सोचते घर पहुँच गया। देव के पिता उसका चेहरा उदास देखकर बोले,''क्या हुआ देव, तुम उदास क्यों हो?'' ''पापा सभी बच्चे मुझे चिढ़ाते हैं। ऊपर से भोंदू-भोंदू बोलते हैं।'' देव ने बताया। इस पर पिताजी ने देव को समझाया और बोले, '' बेटा उनकी बातों पर ध्यान मत देना। वे आज तुम्हें भोंदू कहते हैं तुम मेहनत करोगे, पढ़ोगे, तो वही कल तुम्हें चालाक और होशियार भी कहेंगे।'' फिर देव के पिताजी बोले,''ऐसा करो कि तुम न छुट्टियों को गँवाने की जगह उसका सदुपयोग करो। पढ़ने में मन लगाओ।'' देव ने कहा, ''ठीक है पापा।''

'बेटा स्कूल से आ गये हाथ-पैर धोकर आओ और खाना खाओ।'' देव की माँ बोली। ''जी माँ, मैं अभी आता हूँ।'' देव ने कहा। खाना खाने के बाद वह खेलने चला गया। देव के पापा और मम्मी देव के बारे में बातें कर रहे थे। कुछ घंटों में देव खेलकूद घर आ गया। उसके पापा ने उसे पढ़ने के लिए बुलाया। देव पैर-हाथ धोकर अपने पापा के साथ पढ़ने बैठ गया। देव के पापा और मम्मी उसे पढ़ने में सहयोग करते रहे। देव को भी पढ़ाई में मन लगने लगा। उसके पापा जब घर पर नहीं भी रहते थे तब भी वह खुद से ही पढ़ता था। जहाँ समझ में नहीं आता था, तो वह मम्मी से पूछता था। दिन-ब-दिन देव बदलता गया, उसकी पढ़ाई भी काफी अच्छी हो गई, कुछ ही दिनों में स्कूल खुलने वाला था। देव पूरा महीना भर मन लगाकर पढ़ाता रहा।

''बेटा कल तो तुम्हारा स्कूल खुल रहा है न, कुछ छुटा, तो नहीं ? सारा होमवर्क बना लिया है?'' देव के पिताजी बोले, ''हाँ पापा मैंने सारा होमवर्क बना लिया है।'' देव ने कहा।

जब अगले दिन देव स्कूल गया तो उसके दोस्त लोग फिर से उसे 'भोंदू-भोंदू' कहकर चिढ़ाने लगे। कुछ समय बाद क्लास शुरू हुआ। शिक्षक आये। शिक्षक ने सभी बच्चों से एक प्रश्न किया, राष्ट्रकवि किन्हें कहा जाता है?'' सभी बच्चे सोचे, लेकिन इसका उतर नहीं दे पाये। इसी बीच में से देव खड़ा होकर बोला, ''रामधारी सिंह दिनकर'' बिल्कुल सही मास्टरजी बोले। शिक्षक ने एक और सवाल किया कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पत्नी का नाम क्या है? फिर से किसी बच्चे ने जवाब नहीं दिया। लेकिन देव खड़ा होकर बोला, ''कस्तूरबा गांधी''। शिक्षक ने खुश होकर शाबाशी दी और देव का हौसला बढ़ाया। यह देख सभी बच्चे आश्चर्य में पड़ गये। देव मन-ही-मन बोला, पापा सही कहते थे। कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती, सचमुच मेरी मेहनत रंग लायी है।

-**प्रवीण कुमार**
वर्ग-5

## कुछ नया करें

चलो कुछ नया करते हैं सब से पहले ताड़ के कोमल पत्ते का जुगाड़ कर लें। अब इस पत्ते से बाजा बनाना सीखते हैं। सबसे पहले एक बित्ता लम्बा और एक अंगूल चौड़ा दो पत्तियाँ काट लें। दोनों आपस में सटा दें। अब एक हाथ लम्बा एवं दो अंगूल चौड़ा पत्ते से चित्रानुसार मोड़ें लगभग एक बीता या एक हाथ लम्बा चित्रानुसार मोड़ लेने के बाद फूँकें । देखोगे कि अंग्रेजी बैंड बाजा की तरह आवाज निकलेगी। वाह ! क्या आवाज है इस तरह ताड़ के पत्ते से क्या-क्या चीजें बना सकोगे। हमें जरूर बताना।

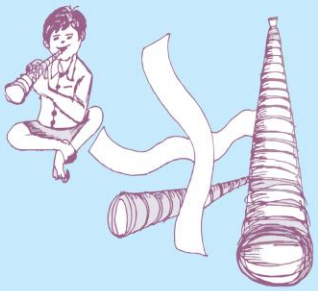

## खेल

# हम बोलें कौन-सा रंग

इस खेल में जितने चाहे उतने बच्चे खेल सकते हैं। एक बच्चा खेल खेलाने वाला होगा जो सभी बच्चों को रंग-बिरंगे कुछ सामान देगा। अब सभी बच्चे अपना-अपना सामान लेकर गोल घेरा बनाकर बैठ जाएँ। खेल खेलाने वाला बच्चा घेरे के अंदर खड़ा रहेगा। और तरह-तरह के रंगों के नाम बोलेगा। जैसे-लाल। तो सभी बच्चों को लाल रंग का सामान हाथ में लेकर ऊपर करके दिखाना होगा। इसी तरह बीच में खड़ा बच्चा रंगों के नाम बोलेगा और सभी बैठे हुए बच्चे को उसी रंग का सामान दिखाना होगा। जिस बच्चे के पास उस रंग का सामान नहीं होगा, वह अपना खाली हाथ उठाएगा। और जो बच्चा गलत रंग का सामान दिखाएगा, वह बच्चा खेल से बाहर होता जाएगा।

-**तुलसी लवली**

## बबलू-बबली के चुटकुले

- **शिक्षक**- कोई ऐसा सामान बताओ जो गर्मी में फैलता हो तथा ठंडक में सिकुड़ता हो?
- **बंटी**- जी, वह छुट्टी।
  शिक्षक-वह, कैसे?
  **बंटी**-गर्मी में एक महीने की छुट्टी होती है और ठंड में 10 दिनों की।

**बबली**-क्योंकि हमारी माँ बहुत बोलती हैं और पापा चुप रहते हैं।

**बबली**-छप्पर ठीक करवाऊँगी।

- **बबलू**-बबलू कल रात नींद कैसी आयी?
  **बबलू**-मुझे क्या पता। मैं तो सो रहा था।
- **बबलू**-क्या तुम मुझे आठवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों के बारे में कुछ बता सकते हो?
  **बबली**-हाँ, उन सबों का देहांत हो चुका है।

कविता

## खुशियाँ खूब चुराऊँगा

धूप चमकती बहार अब,
बहती हवाएँ धूल भरी,
आयी गर्मी का मौसम देखो,
मस्ती की है, ये घड़ी ।
छुट्टियाँ हुईं स्कूलों में
बस्तों से मिला छुटकारा
खूब मजे करेंगे अब हम,
चाहे बढ़े कितना भी पारा ।
ऊँगलियों से रेत पर,
बनायेंगे कुछ तस्वीरें।
तोड़ेंगे आम उस पेड़ से,
जो है, नदिया के तीरें।
नानी के घर जाकर खूब,
खायेंगे तरबूज, खीरा,
पीयेंगे सत्तू का शरबत
मिला उसमें जलजीरा
इस तरह बिताकर छुट्टी,
खुशियाँ खूब चुराऊँगा ।
इन एहसासों को स्कूल जाकर,
फिर अपने दोस्तों को बताऊँगा ।

-**विवेक सुन्दरम्**

## गर्मी की छुट्टी में इस बार

इस गर्मी की छुट्टियों में,
मैं गणित दोहराऊँगा।
एक और एक दो नहीं,
इसे ग्यारह बनाऊँगा।
निकलूँगा नहीं चिलचिलाती धूप में,
लू से खुद को बचाऊँगा
पानी से काम चलता नहीं,
ककड़ी, खीरा, खूब खाऊँगा।
गोलू और गप्पू के साथ,
सुबह में दौड़ लगाऊँगा।
दौड़ लगा, पसीना बहा,
अपना स्वास्थ्य बनाऊँगा।

-सम्राट समीर
वर्ग-9

## अनोखा सबक

आर्या को गर्मी का मौसम बहुत पसंद आता है। क्योंकि गर्मी की छुट्टी में उसे नानी के घर जाने का मौका मिलता था। वहाँ वह कहानियाँ सुनता और बहुत मस्ती करता था। लेकिन वह थोड़ा बदमाश था। नानी से वह अच्छा से बात भी नहीं करता और पढ़ाई करने से डरता था। लेकिन रात को वह नानी से कहानी सुनने पहुँच जाता था। इस साल जब वह छुट्टी में नानी के घर आया, तब नानी ने सोचा कि इस साल आर्या का स्वभाव बदलने की कोशिश करेगी। एक दिन आर्या को घूमाने के लिए बाजार लेकर गई। थोड़ी देर बाद उसे एक होटल में लेकर गई। उसे बोली, ''लो ये 500रु.। तुम यहाँ कुछ पैसे से नाश्ता कर लेना और अपने खिलौने खरीदने के लिए पैसे बचा लेना। मैं कुछ दूसरे काम करके आ रही हूँ। तब तक तुम यहीं रहना।'' आर्या ने नाश्ता किया। कुछ घर लेकर जाने के लिए पैक करवा लिया। दुकानदार को पैसे दिया। दुकानदार ने 250रु. के बदले 500 रु. ले लिए और आर्या को पता भी नहीं चला। उधर नानी भी आने में देर लगा रही थी। अब आर्या रोने लगा। तब तक नानी आई। वह उनसे लिपट गया और बोला दुकानदार ने सारे पैसे ले लिए।'' पैसे देखकर नानी ने कहा, ''तुम्हारे नहीं पढ़ने की वजह से दुकानदार ने तुम्हें ठग लिया।'' यह सुनकर आर्या शर्मिंदा हो गया।

-सौंदर्या सुन्दरम्

## बुझो बूझौवल

- ठंडक में मैं पैदा होती
  लगता जैसे नन्हें मोती
  घास-पात झूलों पर सोती
  देख सबेरा गायब होती।
- है पर्वत से सागर तट तक काया
  अनाज और धन-जन मन सभी समाया
- एक पांव और काली धोती
  सरदी में हरदम है सोती
  गर्मी में छाया करती है,
  मगर बारिश में है वो रोती
- बीच कटे तो बालू कहलाता,
  शुरू कटे तो ढल हो जाता।
  आकाश में उमड़-घुमड़ कर
  बस धरती की प्यास बुझाता।

खोजबीन

## फ्रीज में खाने की वस्तुएँ खराब क्यों नहीं होतीं

दोस्तो! अब तो गर्मियों वाला महीना आ गया है। हमलोगों को गर्म चीजें एकदम पसंद नहीं आती हैं। हमारा बचा हुआ खाना जल्दी खराब हो जाता है। जानते हैं ऐसा इसीलिए होता है कि खाने की वस्तुओं में सड़ने की क्रिया सूक्ष्म जीवों द्वारा होती है। इन जीवों को बैक्टीरिया कहते हैं। सामान्य तापमान पर इनकी संख्या बड़ी तेजी से बढ़ती है। जिससे खाद्य पदार्थ खराब हो जाता है। इसे सुरक्षित रखने के लिए किसी ठंडी जगह या ठंडे स्थान की आवश्यकता होती है। कम तापमान पर इनकी वृद्धि कम हो जाती है। सामान्य पानी जब जमकर बर्फ हो जाता है तो इनकी वृद्धि लगभग समाप्त हो जाती है, क्योंकि इन्हें जीवित रखने के लिए पानी और सामान्य तापमान नहीं मिल पाता है। यही कारण है कि जमा हुआ भोजन लंबी अवधि तक खराब नहीं होता है। कुछ विटामिन्स छोड़कर अन्य पौष्टिक तत्व सुरक्षित रहते हैं।

कम तापमान द्वारा खाने की वस्तुओं को सुरक्षित रखने की बहुत सी विधियाँ काम में लाई जाती हैं, जिनमें हमारे लिए सबसे आसान वस्तु घरों में काम आने वाले फ्रीज या रेफ्रिजरेटर होता है। इसमें फ्रीऑन गैस को दबाकर निम्न तापमान पैदा किया जाता है। जिसमें भोजन जल्दी खराब नहीं होता। भोजन को निम्न तापमान पर रखकर सड़ने से बचाने की तकनीकों को आज सारे संसार में बड़े पैमानों पर प्रयोग में लाया जा रहा है। दोस्तो, इस तकनीक की वहज से हमारे फ्रीज में आइसक्रीम, मांस, मछली, फल, दूध और सब्जियाँ खराब नहीं होती हैं।

- आनंद राज

## गर्मी में मस्ती

छोड़ स्कूल के बस्ते को
स्कूल नहीं अब जाना है
आ चुकी गर्मी की छुट्टी
मस्ती में दिन बिताना है
खेलूँगी मैं कबड्डी
धूल में लोट कर
जीत जाएगी मेरी टोली
मस्ती करूँ जी भर
डूब जाएँगे सूरज दादा
जाकर खाना खाऊँगी
कहानी सुनकर दादी से
आराम से सो जाऊँगी।

-तुलसी लवली

## आपबीती

सभी के जीवन में घटनाएँ घटती रहती हैं। मेरे साथ भी कुछ ऐसी घटना घटी। उनमें से मैं एक घटना बता रही हूँ।। यह उस समय की बात है जब मैं कक्षा तीन में थी। बात सुबह के आठ बजे मेरे पापा और स्कूल के मुख्य द्वार पर मुझे पहुँचा कर वापस घर चले गए। मैं हर दिन की तरह अपनी कक्षा में जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। तभी ऊपर से दौड़कर आते हुए एक लड़के से मैं टकरा गई और नीचे जा गिरी। सीढ़ी के कोने से मेरा सर फट गया। पुन: उन सीढ़ियों पर चढ़कर अपनी कक्षा तक पहुँची थी तब तक मेरे सर से बहुत खून निकल चुका था। मेरा लाल रंग का स्वेटर खून से भींगकर मैरून रंग का हो चुका था। कक्षा में पहुँचने कि बात पर मेरी दोस्त बोली, ''सुप्रिया तुम्हारे सिर से खून निकल रहा है। मैं बौखला गई और सर छुआ तो सचमुच खून निकल रहा था।''

मेरे साथी मुझे सिस्टर के पास ले गये। सौभाग्यवश मेरा घर स्कूल के नजदीक में ही था। विद्यालय के एक कर्मचारी द्वारा मुझे वहाँ पहुँचाया गया। मुझे इस हालत में देखकर मेरे मम्मी-पापा भौचक्के रह गये। तुरंत पापा ने अस्पताल में भर्ती कराया। वहाँ डॉक्टर ने मेरे माथे की सफाई कर सिलाई की। पूरे ग्यारह टाँके पड़े। कुछ कुछ देर पर मैं माँ-माँ चिल्लाती थी। उसके बाद पापा एवं अंकल के साथ मैं स्कूल गई। सिस्टर से बात हुई। उन्होंने उस लड़के को मुझसे मिलवाया। वह लड़का इतना डरा हुआ था कि आते के साथ ही सॉरी-सॉरी कह कर रोने लगा।' मेरे पापा ने कोई शिकायत नहीं की। उसे माफ कर दिया दिया। सर से बहुत खून निकल जाने से मैं बहुत कमजोर हो गई थी। कुछ ही दिन बाद मेरी अर्द्धवार्षिक परीक्षा होने वाली थी। मैं उतना पढ़ नहीं पाई । जितना पढ़ना चाहिए था। मेरी स्थिति को देख सिस्टर और फादर ने यह निर्णय लिया कि मुझे जो भी अंक प्राप्त होंगे उतने में ही उत्तीर्ण कर दिया जाएगा। मैं घर आयी। घर में, मेरे माँ-पापा ने मुझ पर बहुत ध्यान दिया। कुछ दिनों के बाद मेरी परीक्षा शुरू हुई। मैने परीक्षा में 89% अंक प्राप्त कर लिए। मैं तीसरे स्थान पर थी। यह देखकर मम्मी-पापा के साथ पूरे शिक्षक सिस्टर एवं फादर ने आशीर्वाद दिया। मैं बहुत खुश थी। उस दिन को मैं भुलाए नहीं भूलती। जिंदगी तो चलते रहने का नाम है इसमें बहुत सारी दुखद घटनाएँ होती हैं, पर हमें इस सब को नंजरअंदाज कर के आगे बढ़ते रहना चाहिए।

-सुप्रिया कुमारी

## नन्हें कलाकार

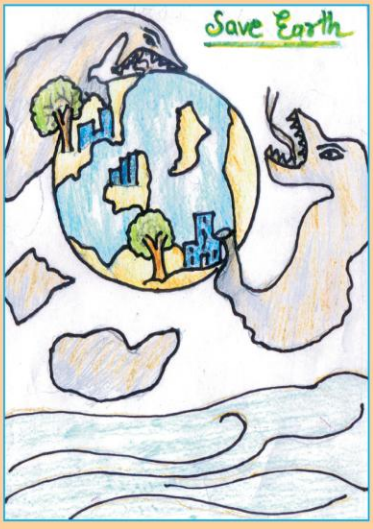


राजीव रंजन

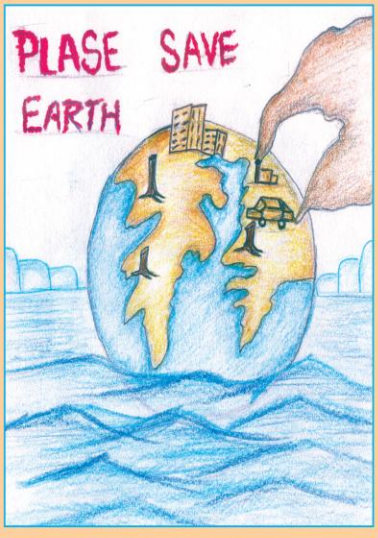


विक्रम राज

आसमा

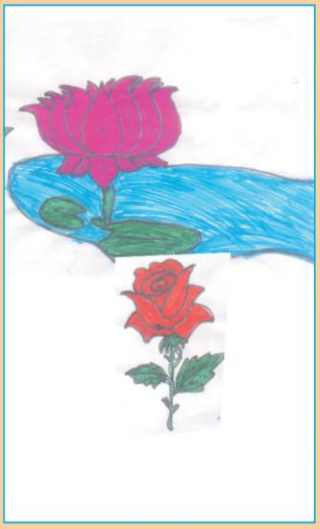

ट्विंकल कुमारी

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

चलो घूमने चले

# कुल्लू

प्यारे दोस्तो....

कैसे हैं....आप सभी? आप सबों की गर्मी की छुट्टी लगभग होने ही वाली है। तो आप लोगों ने क्या सोचा है? इस बार की गर्मी की छुट्टियाँ कहाँ बितानी हैं? हमारे कई दोस्तों ने सोच ही लिया होगा और कई अभी भी सोचने में लगे होंगे।

मैंने भी सोच लिया है, इस बार आप लोगों को मैं कुल्लू ले चलूँ।

कुल्लू...हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से 240 कि.मी. दूर व्यास नदी के तट पर स्थित है। इसे देखकर ऐसा लगता है कि ईश्वर ने इसे प्राकृतिक सौंदर्य मुक्त हाथों से दिया हो। हमारे कानों को लुभाते घाटियों में संगीत घोलते झरने, छोटी-मोटी कई वादियाँ, हरे-भरे फैले मैदान, चारागाहें, सेब के बागों आदि के कारण यहाँ का आकर्षण कई गुना बढ़ जाता है।

दोस्तो, हमलोग रेलगाड़ी से कालका शिमला रेल-मार्ग से शिमला और फिर यहाँ से बस या टैक्सी से कुल्लू तक पहुँच सकते हैं। जहाँ तक सड़क मार्ग की बात रही तो हम राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 21 से भी पहुँच सकते हैं। यहाँ घूमने का सबसे अच्छा मौसम अप्रैल से जुलाई के बीच है और अक्टूबर से बीच दिसम्बर तक होता है।

दोस्तो... आप यहाँ आ कर कुल्लू के प्रमुख दर्शनीय स्थल घूम सकते हैं। ढालपुर मैदान, जो अपनी हरियाली और सुंदरता के कारण इतना प्रसिद्ध है कि यहाँ घंटों बैठे रहने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं।

रघुनाथ मंदिर जो यहाँ की काष्ठकला बहुत ही उन्नत और प्रसिद्ध है।

इन सब के अलावा कुल्लू की आसपास उहाम्प बिजली महादेव मंदिर, बजौरा, केशधार, रायसन, कटराई, लारजी, मलाना, कसोल, मर्णीकर्ण और बंजार घूमने जा सकते हैं।

यहाँ आतिथ्य सेवा और सत्कार की भी बेहतर अनुभव देखने को मिलेगा। सच में, यहाँ दूर-दूर तक फैले पहाड़ ऊँचे-ऊँचे पेड़ और पक्षियों का कलरव कुल मिलाकर एक मनोरम दृश्य हमारे मन मस्तिष्क में बनाते हैं, जो हमें एकटक बिना पलक झपकाए इन्हें निहारने को विवश करती हैं। शोर-शराबों से कोसों दूर यह शहर हमारे बेचैन मन को शांति के सागर में ले जाती है। बच्चे, बड़ों और बुर्जुगों के लिए यह शहर एक शब्द में कहें तो 'परफेक्ट' हैं।

दोस्तो, तो इस बार आप अपनी गर्मी की छुट्टियाँ प्रकृति के साथ भी गुजार सकते हैं 'कुल्लू' जाकर देखें।

-पवन राज

## आलसी मत बन बेटा

स्कूल से घर आया दौड़ के
लिया भूँजा एक मुट्ठी
मम्मी ने पूछा क्या हुआ
हुई गर्मी की छुट्टी क्या।

शाम को जब खेल के आया
पापा ने आईसक्रीम खिलाया
इस मौसम में यह तो सबको
और मेरे मन को है भाया
दो मिनट में मन ठंडाया।

टी.वी. चालू कर कूलर के नीचे
मैं या मगन में लेटा
आई मेरी मम्मी, बोलीआलसी मत बन बेटा।

-युवराज सिंह
वर्ग-5

## ऋतुओं की लड़ाई

एक बार हुई सभी ऋतुओं में,
जमकर खूब लड़ाई।
सबने बारी-बारी से आकर,
कि अपनी खूब बड़ाई।
गर्मी कहता है यह कि
मैं हूँ अच्छा सबसे।
क्योंकि गर्मी में मस्ती,
होती है खूब ही जमके।
लेकिन जाड़े की बात निराली,
स्वेटर, टोपी हाथ न खाली।
अमीर-गरीब की पहचान कराती,
यह ऋतु सब को सताती।
वर्षा बोली जब मैं आती,
देख किसान मन में हर्षाते।
क्योंकि उनकी फसल वर्षा से,
दुगुनी पैदावर दे जाते
लेकिन वसंत ऋतु तो यारो,
पड़ गई सब पर खूब भारी।
क्योंकि जब वह आती है तो,
चारों ओर हरियाली।

-अतुल राय

कैमरे में किलकारी

# हूला-हूप्स डांस कार्यशाला

दिनांक 15-16 अप्रैल, 2015 को किलकारी बिहार बाल भवन में दो दिवसीय हूला-हूप्स कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रशिक्षक के रूप में कैरिसा कैरिकेटो (हूला-हूप्स फॉर हैपीनेस, यू.एस.ए.) एवं दीप शिखा (गुड न्यूज सेंटर, राँची) ने भाग लिया। इन्होंने बच्चों को हूला-हूप्स के महत्त्वों के बारे में बताया। बच्चों को समूह में काम करना सिखाया गया। हूला-हूप्स एक तरह का शारीरिक व्यायाम है जिसे नियमित करने से शरीर का वजन भी घटाया जा सकता है।

इस कार्यशाला में लगभग 250 बच्चों ने भाग लिया। किलकारी बिहार बाल भवन के अलावे भागलपुर, गया के भी बच्चे इसमें शामिल थे।

सही मायने में हूला-हूप्स रिंग को कहते हैं। इसमें कुल पांच रंगों-पीला, लाल, काला, हरा और उजला का मिश्रण होता है। इन रंगों का अपना-अपना महत्त्व है। खास बात यह है कि इन सभी रंगों का हमारी जिंदगी में बहुत महत्त्व है। जैसे-पीला-खुशी, काला-अंधकार, लाल-प्यार, सफेद-आजादी की प्रतीक एवं हरा-जीवन में आगे बढ़ना सिखाता है।

हूला-हूप्स डाँस सीख कर बच्चों ने नाटक एवं नृत्य से जोड़कर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। हूला-हूप्स सीखकर बच्चे काफी उत्साहित हुए। दो दिन आनंदमय वातावरण में बीत गए, पता ही नहीं चला।

इस अंक के प्रतिभागी
युवराज -I, II, राहुल, वैष्णवी, प्रवीण, सौरव, अतुल, शुभ दर्शन, सौन्दर्या, सुप्रिया, चन्द्रप्रकाश, अभिषेक
बाल सम्पादक-मुनदुन, आनंद, विवेक, श्रुति, सम्राट, तुलसी, विष्णु।
संयोजक :- सुधीर कुमार
संपादक-ज्योति परिहार, निदेशक, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना ।
विशेष सहयोग : राजीव रंजन श्रीवास्तव
कार्यालय : किलकारी, बिहार बाल भवन, सैदपुर, पटना- 800004, बिहार
मुद्रक : राकेश प्रिंटिंग प्रेस, जय माँ गिरिजा कम्प्यूटर्स, पटना

इस अंक के जवाब माथापच्ची :
- बुझो-बूझौवल : 13 और 14
- ओस
- नदी
- छाता •बादल